Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSC – IAS

सिविल सेवा परीक्षा

संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर 2 – भाग – 3

समाज, सामाजिक न्याय एवं शासन

SIERRA INNOVATIONS

IAS

पेपर - 2 भाग - 3

समाज, सामाजिक न्याय एवं शासन

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**भारतीय समाज** • समाज • जनसांख्यिकीय संरचना • भारतीय समाज का विकास • विषय ○ पदानुक्रम ○ शुद्धता और मलीनता ○ सामाजिक अन्योन्याश्रय • भारतीय समाज की विशेषताएं	1
2.	**परिवार और रिश्तेदारी** • परिवार ○ परिवार की विशेषताएं ○ भारतीय परिवारों की बदलती प्रकृति ○ भारतीय परिवार संरचना में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारक • विवाह ○ विवाह के प्रकार ○ विवाह के नियम • रिश्तेदारी ○ रिश्तेदारी के प्रकार ○ रिश्तेदारी की डिग्री ○ रिश्तेदारी के सिद्धांत • वंश ○ रिश्तेदारी और वंश के बीच अंतर	4
3.	**भारत की सांस्कृतिक पहचान** • संस्कृति की विशेषताएं • भारत की संस्कृति • अमूर्त सांस्कृतिक विरासत • सांस्कृतिक विरासत का महत्व • सरकार की पहल	11
4.	**क्षेत्रवाद** • विशेषताएं • क्षेत्रवाद के प्रकार • क्षेत्रवाद के प्रभाव ○ सकारात्मक प्रभाव ○ नकारात्मक प्रभाव • क्षेत्रवाद से निपटने के उपाय • भूमि पुत्र	14

	○ प्रमुख विशेषता • क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने के लिए संवैधानिक प्रावधान ○ राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा देने के लिए सरकार का प्रयास ○ क्षेत्रवाद बनाम राष्ट्रवाद	
5.	**धर्मनिरपेक्षता** • भारत में धर्मनिरपेक्षता का इतिहास ○ प्राचीन इतिहास ○ मध्यकालीन इतिहास ○ आधुनिक इतिहास ○ गांधी का दृष्टिकोण ○ नेहरू का दृष्टिकोण • संविधान और धर्मनिरपेक्षता • भारतीय धर्मनिरपेक्षता के लक्षण ○ धर्मनिरपेक्षता का पश्चिमी मॉडल ○ धर्मनिरपेक्षता का भारतीय मॉडल ○ धर्मनिरपेक्ष राज्य के लिए चुनौतियाँ और खतरे ○ धर्मनिरपेक्षता का महत्व • सरकारी पहल ○ बहु-क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम: ○ भारत में धर्मनिरपेक्षता के संबंध में न्यायिक घोषणाएं ○ सार्वभौमिक नागरिक संहिता (UCC)	**18**
6.	**सांप्रदायिकता** • भारत में साम्प्रदायिकता ○ भारत में सांप्रदायिकता के चरण • सांप्रदायिकता के तत्व • सांप्रदायिकता के लक्षण • सांप्रदायिकता की विशेषताएं • सरकार के कदम • अल्पसंख्यकों के लिए प्रधानमंत्री का 15 सूत्री कार्यक्रम	**26**
7.	**भाषावाद** • भाषावाद के कारण • भाषावाद के परिणाम • उपचारी उपाय	**30**
8.	**जातिवाद** • उत्पत्ति का सिद्धांत ○ पारंपरिक सिद्धांत ○ नस्लीय सिद्धांत ○ राजनीतिक सिद्धांत ○ व्यावसायिक सिद्धांत ○ विकासवादी सिद्धांत • अनुसूचित जाति ○ अनुसूचित जातियों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं ○ सामाजिक मुद्दे ○ सार्वजनिक अक्षमता ○ धार्मिक मुद्दे	**33**

	○ शैक्षिक मुद्दे ○ आर्थिक मुद्दें • जाति और वोट बैंक की राजनीति ○ जाति व्यवस्था को मजबूत करना और वोट बैंक की राजनीति: ○ अनुसूचित जाति के विकास के लिए पहल	
9.	**अल्पसंख्यक** • अल्पसंख्यक समूह के प्रकार • भारत में अल्पसंख्यक ○ संवैधानिक प्रावधान ○ भारत में अल्पसंख्यकों के सामने आने वाली समस्याएं ○ अल्पसंख्यकों के प्रति आक्रोश का कारण • अल्पसंख्यकों के बीच शिक्षा और रोजगार • सरकार की पहल	**37**
10	**आरक्षण** • ऐतिहासिक विकास • आरक्षण की आवश्यकता • संवैधानिक प्रावधान • प्रमोशन में आरक्षण की मांग • आरक्षण की मांग तेजी से क्यों बढ़ रही है? • आरक्षण के पक्ष में तर्क • आरक्षण के खिलाफ तर्क • आरक्षण प्रणाली की चिंताएं/चुनौतियां • क्या किया जा सकता है? • भविष्य के पहलू	**40**
11.	**शहरीकरण** • भारतीय शहरीकरण की विशेषताएं • शहरीकरण की प्रक्रिया • भारत में शहरीकरण का विकास ○ भारतीय शहरीकरण में अंग्रेजों का योगदान • शहरीकरण के कारण • शहरीकरण के सामाजिक प्रभाव ○ शहरीकरण और महिलाओं की स्थिति ○ शहरीकरण और जाति ○ शहरीकरण और रिश्तेदारी • शहरीकरण के वर्तमान मॉडल • शहरीकरण के मुद्दे • शहरीकरण के उपाय • नव गतिविधि	**45**
12.	**वैश्वीकरण** • वैश्वीकरण की सहायता करने वाले कारक • वैश्वीकरण के प्रभाव ○ सांस्कृतिक प्रभाव ○ आर्थिक प्रभाव ○ राजनीतिक प्रभाव ○ सामाजिक प्रभाव	**53**

	○ महिलाएं ○ युवा ○ जाति • वैश्वीकरण विरोधी ○ भारत पर प्रभाव • वैश्वीकरण 4.0 ○ वैश्वीकरण के आगे चुनौतियां 4.0 ○ क्या किये जाने की आवश्यकता है	
13	**विकास** • मानव विकास के उद्देश्य • मानव विकास के घटक	**59**
14	**कमजोर वर्ग** • कमजोर वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का औचित्य • समाज के कमजोर वर्ग • बाल ○ बच्चों से जुड़े मुद्दे ○ यौन शोषण ○ बच्चों को यौन शोषण से बचाने के लिए कानून ○ बाल श्रम ○ बाल विवाह ○ आवश्यक कदम • अनुसूचित जनजाति/SC/OBC ○ अनुसूचित जाति से संबंधित योजनाएं ○ अनुसूचित जनजाति से संबंधित योजनाएं ○ ओबीसी के लिए योजनाएं • युवा ○ समस्याओं का सामना करना पड़ा ○ सरकार की पहल • वरिष्ठ नागरिक ○ बड़े दुर्व्यवहार के रूप ○ योजना ○ उपाय की जरूरत • विकलांग व्यक्ति ○ भेदभाव के रूप ○ योजना • अल्पसंख्यकों ○ अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए योजनाएं • LGBT समुदाय ○ समस्याएँ ○ योजना	**62**
15.	**शिक्षा** • भारत में शिक्षा • भारत में शिक्षा की स्थिति • संवैधानिक प्रावधान • शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009	**78**

	○ प्रावधान ○ उपलब्धियां ○ सीमाएँ • राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ○ प्रमुख प्रावधान • भारत में शिक्षा ○ सरकार की पहल ○ माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा ○ उच्च शिक्षा ○ भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली की संरचना ○ भारत में उच्च शिक्षा से जुड़े मुद्दे ○ उच्च शिक्षा से जुड़े निकाय ▪ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ○ सरकार की पहल	
16.	**गरीबी** • गरीबी के आयाम ○ MPI 2020- प्रमुख निष्कर्ष • गरीबी के प्रकार • भारत में गरीबी के कारण • भारत में गरीबी का अनुमान • गरीबी पर विभिन्न समितियों की सिफारिशें • रंगराजन समिति	**88**
17.	**जनसंख्या और संबंधित मुद्दे** • जनसंख्या वृद्धि पर माल्थस का सिद्धांत ○ कार्ल मार्क्स की आलोचना • जनसांख्यिकीय संक्रमण • जनसंख्या पिरामिड ○ जनसंख्या पिरामिड के प्रकार • भारतीय जनसंख्या के निर्धारक • जनसांख्यिकीय विभाजन ○ भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश ○ जनसांख्यिकीय लाभांश से जुड़े लाभ ○ जनसांख्यिकीय लाभांश से जुड़ी चुनौतियाँ ○ क्या किये जाने की आवश्यकता है? ○ सरकार की पहल • जनसंख्या नियंत्रण • परिवार नियोजन ○ सरकार की पहल • जनसंख्या के मुद्दे • प्रवासन ○ संबंधित शर्तें ○ प्रवास को प्रभावित करने वाले कारक ○ आधुनिक समाजों पर प्रवास का प्रभाव • बेघर ○ बेघर होने के कारण	**95**

	○ बेघर लोगों के सामने चुनौतियां • राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 • संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA)	
18.	**स्वास्थ्य** • संवैधानिक प्रावधान • स्वास्थ्य संकेतक • भूख और कुपोषण • वैश्विक भूख सूचकांक ○ GHI के निष्कर्ष • भारत में स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली और बुनियादी ढांचा ○ सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र ○ निजी क्षेत्र ○ पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियां ○ स्वैच्छिक स्वास्थ्य एजेंसियां ○ राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम • यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज ○ UHC का महत्व ○ UHC के साथ मुद्दे ○ सरकार की पहल • स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में PPP मॉडल ○ उद्देश्य ○ सार्वजनिक-निजी सहयोग के मुद्दे ○ आवश्यक उपाय • नीतिगत ढांचा ○ राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) (2013) ○ राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 ○ राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम 2017 ○ आयुष्मान भारत- राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन (AB-NHPM) ○ राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन, 2020 ○ अन्य पहल • आयुष	**108**
19.	**महिला एवं महिला संगठन** • भारत में महिलाएं • वर्तमान स्थिति • राजनीतिक स्थिति • आर्थिक स्थिति ○ श्रम बाज़ार में महिलाओं की भागीदारी ○ वैश्विक लैंगिक अंतर रिपोर्ट 2021 ○ मातृत्व लाभ अधिनियम 2017 • सामाजिक स्थिति ○ सरकार की पहल ○ महिला और साक्षरता • सांस्कृतिक स्थिति ○ पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की स्थिति ○ विवाह	**122**

	○ शिक्षा, भुगतान किया गया रोजगार और घरेलू दायित्व ○ कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र ○ कृषि में महिलाएं • विविध मुद्दे	
20.	**शासन** • शासन के हितधारक • सुशासन • भारत में शासन • भारत में शासन के मुद्दे ○ सुशासन के लिए आवश्यक पूर्व शर्तें ○ सुशासन के लाभ • भारत में सुशासन की पहल	**133**
21.	**नागरिक चार्टर** • उत्पत्ति • नागरिक चार्टर के सिद्धांत • नागरिक अधिकार पत्र का महत्व • नागरिक चार्टर और भारत • भारत में नागरिक चार्टर के मुद्दे • द्वितीय एआरसी अनुशंसाएं • सेवोत्तम मॉडल • महत्व • समयबद्ध सेवाओं का वितरण	**138**
22.	**सामाजिक परीक्षण** • प्रकार • सामाजिक लेखा परीक्षा के सिद्धांत • महत्व • सीमाएँ	**141**
23.	**ई-शासन** • प्रयोजन • संभावित नतीजे • ई-गवर्नेंस की संभावना • ई-गवर्नेंस के मॉडल ○ सरकार के लिए नागरिक (G2C) ○ सरकार से सरकार (G2G) ○ व्यवसायों के लिए सरकार (G2B) ○ कर्मचारियों के लिए सरकार (G2E) • डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत पहल ○ राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना (एनईजीपी) ○ ई-क्रांति (सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी) ○ दर्पण ○ प्रगति ○ सीएससी 2.0 (सामान्य सेवा केंद्र 2.0) ○ अन्य पहल • ई-गवर्नेंस के लिए चुनौतियाँ • दूसरी एआरसी सिफारिशें	**143**

24.	**सिविल सेवाएं** • विकास • वर्तमान स्थिति: • संवैधानिक प्रावधान • लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका • संवर्ग के आधार पर सिविल सेवाएं • संवर्ग आधारित सिविल सेवाओं में मुद्दे • सिविल सेवा में पार्श्व प्रवेश ○ पार्श्व प्रविष्टि की आवश्यकता ○ पार्श्व प्रविष्टि के साथ मुद्दे • सिविल सेवाओं में मुद्दे ○ सिविल सेवाओं में आवश्यक सुधार	**148**
25.	**वैश्विक शासन** • शक्ति • वैश्विक शासन की आवश्यकता • लाभ • आलोचनाएं • बढ़ती शक्तियों द्वारा उठाए गए कदम • वैश्विक शासन की औपचारिक संस्था ○ वैश्विक शासन निकाय ○ अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान और विकास एजेंसियां ○ खाद्य पोषण और कृषि में विशिष्ट संगठन o संबंधित क्षेत्र में विशिष्ट संगठन	**153**

1 CHAPTER भारतीय समाज

समाज

- **पीटर एल. बर्जर:** समाज एक मानवीय उत्पाद है जो लगातार अपने उत्पादकों पर कार्य करता है।
- **आर.एम. मैक्लेवर:** समाज सामाजिक संबंधों का एक जाल है जो हमेशा बदलता रहता है जहां एक व्यक्ति इसकी मूल इकाई बनाता है।
- इसमें मनुष्यों के समूह होते हैं जो विशिष्ट प्रणालियों और रीति-रिवाजों, संस्कारों और कानूनों का उपयोग करते हुए एक साथ जुड़े होते हैं और एक सामूहिक सामाजिक अस्तित्व रखते हैं।

एक पारंपरिक समाज की विशेषताएं

- व्यक्ति की स्थिति उसके जन्म से निर्धारित होती है और सामाजिक गतिशीलता के लिए प्रयास नहीं करती है।
- व्यवहार रीति-रिवाजों, परंपराओं, मानदंडों और मूल्यों के अधीन होता है।
- सामाजिक संगठन या व्यक्तियों के बीच संबंध पदानुक्रम पर आधारित होते हैं।
- सम्बन्धों में रक्त-सम्बन्धों की प्रधानता होती है।
- व्यक्ति को जितने महत्व का अधिकार प्राप्त होता है उसको उससे अधिक महत्व दिया जाता है।
- रूढ़ीवादी।
- जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था।
- पौराणिक विचार प्रबल होते हैं।

जनसांख्यिकीय संरचना

- जनसांख्यिकी (डेमोग्राफी): किसी देश, क्षेत्र या समुदाय की आबादी का वैज्ञानिक अध्ययन।
- डेमोग्राफी → डेमोस लोग + ग्रेफ़ीन ग्राफ

<u>जनसांख्यिकी को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -</u>

- **औपचारिक जनसांख्यिकी:** जनसंख्या का एक सांख्यिकीय विश्लेषण, जिसमें कुल जनसंख्या, पुरुषों और महिलाओं की संख्या, युवाओं की संख्या, कामकाजी आबादी और ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या (मात्रात्मक आंकड़े) शामिल हैं।
- **सामाजिक जनसांख्यिकी:** किसी समुदाय में होने वाले जन्म, मृत्यु और प्रवास की संख्या।

<u>यह चार प्रक्रियाओं से बना है:</u>

- जनसांख्यिकीय संरचना: एक क्षेत्र विशेष में लोगों की संख्या,
- जनसांख्यिकीय प्रक्रियाएं: जन्म दर, मृत्यु दर, प्रवासन,
- सामाजिक संरचना: एक क्षेत्र की संरचना,
- सामाजिक प्रक्रियाएँ: वे प्रक्रियाएँ जिनके द्वारा व्यक्ति समाज में शांति और सद्भाव के साथ एक साथ रहना सीखते हैं। जैसे: सहयोग, आवास, मध्यस्थता आदि।

भारतीय समाज का उदभव

- **प्राचीन काल:** भारतीय समाज एक स्तरीकृत समाज था।
- ऋग्वेद में उल्लेख किया गया है कि समाज आर्यों और गैर-आर्यों में विभाजित था।

<u>व्यवसायों के आधार पर आर्य समाज को आगे 4 समूहों में विभाजित किया गया:</u>

- ब्राह्मण
- क्षत्रिय

- वैश्य
- शूद्र
- सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों का यह विभाजन एक आदर्श और सामाजिक उपकरणों का अंग बन गया।

मध्य काल:

- भारतीय संस्कृति भाषा, संस्कृति और धर्म को प्रभावित करने वाले परिवर्तनों के दौर से गुजरी।
- हिंदू और मुस्लिम संस्कृति के टकराव ने मिश्रित संस्कृति को जन्म दिया: सूफी लेखन, भक्ति आंदोलन, कबीर पंथ।

आधुनिक भारत:

- आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से अंग्रेजों के आगमन ने अखिल भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय सामाजिक जागृति के पुन: उदय को चिह्नित किया।
- स्वतंत्रता के बाद विभिन्न जाति समूहों धर्मों, जाति जनजातियों, भाषाई समूहों को मिला दिया।
- धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी स्वरुप के अपने लक्ष्यों के रूप में स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व के आदर्श स्थापित।

विषय

<u>पदानुक्रम</u>

- भारत एक सामाजिक रूप से पदानुक्रमित देश है, चाहे उत्तर या दक्षिण भारत में, हिंदू या मुस्लिम, शहरी या ग्रामीण, लगभग हर चीज, लोगों और सामाजिक समूहों का मूल्यांकन विभिन्न प्रकार के आवश्यक गुणों के आधार पर किया जाता है।
- जाति समूह, व्यक्ति, और परिवार और रिश्तेदार समूह सभी सामाजिक पदानुक्रम प्रदर्शित करते हैं।
- यद्धपि जातियाँ हिंदू धर्म से सबसे अधिक निकटता से जुड़ी हुई हैं, लेकिन जाति-जैसा समूह मुसलमानों, ईसाइयों और अन्य धार्मिक समूहों में भी पाए जा सकते हैं।
- अधिकांश गांवों या कस्बों में हर कोई स्थानीय रूप से प्रतिनिधित्व की जाने वाली प्रत्येक जाति के सापेक्ष श्रेणी से अवगत है, और यह जानकारी लगातार व्यवहार को निरुपित कर रही है।
- परिवारों और रिश्तेदारी समूहों के भीतर, पदानुक्रम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें पुरुष समान उम्र की महिलाओं से आगे निकल जाते हैं और बड़े रिश्तेदार कनिष्ठ रिश्तेदारों से अग्रणी हो जाते हैं।

<u>पवित्रता और प्रदूषण</u>

- सामाजिक स्थिति की असमानताएँ: धार्मिक शुद्धता और प्रदूषण के संदर्भ में व्यक्त की जाने वाली अवधारणाएँ जातियों, धार्मिक समूहों और स्थानों के बीच व्यापक रूप से फैली हुई हैं।
- पवित्रता: सामान्यत: उच्च पद को पवित्रता से जोड़ा जाता है।
- प्रदूषण: निम्न पद प्रदूषण से जुड़ा है।
- कुछ प्रकार की पवित्रता अंतर्निहित होती है।
- उदाहरण: उच्च कोटि के ब्राह्मण या पुरोहित जाति का एक सदस्य सफाईकर्मी, या मेहतर, जाति की तुलना में अधिक आंतरिक स्वच्छता के साथ पैदा होता है।
- अन्य प्रकार की शुद्धता अधिक क्षणभंगुर होती है।
- **उदाहरण:** हाल ही में नहाया हुआ ब्राह्मण उस व्यक्ति की तुलना में अधिक पवित्र होता है जिसने दिन में स्नान नहीं किया है।

अनुष्ठान स्वच्छता, पवित्रता से जुड़ी होती है जिसमें सम्मिलित हैं:

- बहते पानी में रोज नहाना,
- ताज़े धुले हुए कपड़े पहनना,
- केवल अपनी जाति के अनुकूल भोजन करना,

- निम्न श्रेणी के व्यक्तियों या अशुद्ध चीजों के सीधे संपर्क से बचना।
- **उदाहरण:** दूसरे वयस्क के शरीर का अपशिष्ट।
- हिंसा में शामिल होना धार्मिक रूप से अपवित्र है।

परस्पर निर्भरता

- लोग परिवारों, कुलों, उपजातियों, जातियों और धार्मिक समुदायों में पैदा होते हैं, और वे उनसे अटूट रूप से जुड़े हुए महसूस करते हैं।
- मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिवार में उच्च स्तर की भावनात्मक निर्भरता होती है।
- आर्थिक गतिविधियाँ सामाजिक संरचना पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न प्रकार के रिश्तेदारी संबंधों के माध्यम से परिजन से जुड़ा होता है।
- सामाजिक संबंध किसी भी गतिविधि में व्यक्ति की सहायता कर सकते हैं।
- धार्मिक रूप से, अंतर्संबंध के बारे में जागरूकता होती है।
- एक बच्चा जन्म से सीखता है कि उसका "भाग्य" दैवीय शक्तियों द्वारा "लिखा" गया है और उसके अस्तित्व को सर्वशक्तिमान देवताओं द्वारा स्वरूप दिया गया है जिनके साथ उसका निरंतर संपर्क होना चाहिए।

भारतीय समाज की विशेषताएं

- **बहुजातीय समाज:** भारत में नस्लीय समूहों की एक विशाल श्रृंखला के सह-अस्तित्व के कारण, भारतीय समाज चरित्र में बहु-जातीय है।

समूहों के प्रकार:

- जातीय-भाषाई: साझा भाषा और बोली। उदाहरण: फ्रांसीसी कनाडाई।
- जातीय-राष्ट्रीय: साझा राजनीति या राष्ट्रीय पहचान की भावना। जैसे: ऑस्ट्रियाई।
- जातीय-नस्लीय: आनुवंशिक उत्पत्ति के आधार पर साझा शारीरिक उपस्थिति। उदाहरण: अफ्रीकी अमेरिकी।
- जातीय-क्षेत्रीय: सापेक्ष भौगोलिक अलगाव से पनपी अपनेपन की एक विशिष्ट स्थानीय भावना। उदाहरण: न्यूजीलैंड के साउथ आइलैंडर्स।
- जातीय-धार्मिक: किसी विशेष धर्म, संप्रदाय या संप्रदाय के साथ साझा संबद्धता। जैसे: यहूदी।

बहुभाषी समाज: भारत में 1600 से अधिक भाषाएँ बोली जाती है।

बहु-वर्गीय समाज: भारतीय समाज और सामाजिक स्थिति के आधार पर कई वर्गों में विभाजित है।

पितृसत्तात्मक समाज: महिलाओं की तुलना में पुरुषों की सामाजिक स्थिति उच्च होती हैं।

अनेकता में एकता: भारत में विविधता कई स्तरों पर और अनेक रूपों में विद्यमान है, फिर भी सामाजिक संस्थाओं और प्रथाओं में एक बुनियादी एकता बनी हुई है।

परंपरावाद और आधुनिकता का सह-अस्तित्व:

- **परंपरावाद:** आवश्यक विश्वासों को अक्षुणा रखना या उनका संरक्षण करना।
- **आधुनिकता:** तर्कसंगत सोच, सामाजिक, वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति की ओर एक कदम।

अध्यात्मवाद और भौतिकवाद के मध्य संतुलन प्राप्त करना: अध्यात्मवाद का मूल लक्ष्य लोगों की ईश्वर के साथ बेहतर संबंध बनाने में मदद करना है।

- भौतिकवाद आध्यात्मिक आदर्शों पर भौतिक वस्तुओं और शारीरिक आराम को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति है।

व्यक्तिवाद और सामूहिकवाद संतुलन में हैं - व्यक्तिवाद एक नैतिक, राजनीतिक या सामाजिक दृष्टिकोण है जो कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता पर बल देता है।

- सामूहिकता प्रत्येक व्यक्ति पर एक समूह को प्राथमिकता देने की प्रथा है। भारतीय समाज में इनके बीच एक कमजोर संतुलन है।

रक्त संबंध और नातेदारी: अन्य सामाजिक अंतःक्रियाओं में महत्वपूर्ण लाभ रखते हैं और जीवन के राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं।

2 CHAPTER परिवार और नातेदारी

<u>परिवार</u>

- बर्गेस और लॉक के अनुसार: एक परिवार उन लोगों का एक समूह है जो विवाह, रक्त या गोद लेने के माध्यम से जुड़े होते हैं और एक ही घर बनाते हैं, जो पति और पत्नी, माता और पिता, भाई और बहन के रूप में अपनी सामाजिक भूमिकाओं में संलग्न होते है और एक साझा संस्कृति का निर्माण करते है।

परिवार की विशेषताएं

- **<u>सार्वभौमिकता</u>:** ऐसा कोई मानव समुदाय नहीं है जहां परिवार किसी न किसी रूप में मौजूद न हो।
- मालिनोवस्की का मानना है कि सामान्य परिवार, जिसमें माता, पिता और उनकी संतान शामिल हैं, आदिम, बर्बर और सभ्य लोगों सहित सभी संस्कृतियों में पाए जा सकते हैं।
- सार्वभौमिकता प्रजनन की आवश्यकता और आर्थिक मांगों के कारण है।
- **<u>भावनात्मक आधार</u>:** परिवार भावनाओं पर बना होता है।
- संभोग, प्रजनन, मातृ प्रेम, भ्रातृ स्नेह और माता-पिता की देखभाल के लिए हमारी प्रवृत्ति इसका एक हिस्सा हैं।
- यह प्यार, स्नेह, करुणा, सहयोग और दोस्ती की भावनाओं पर आधारित है।
- **<u>सीमित आकार</u>:** परिवार में सदस्यों की संख्या सीमित होती है। यह सबसे छोटी सामाजिक इकाई है। एक प्रमुख समूह के रूप में इसका आकार आवश्यकता से प्रतिबंधित है।
- **<u>रचनात्मक प्रभाव:</u>** एक ऐसा माहौल बनाता है जिसमें बच्चों को प्रशिक्षित और शिक्षित किया जाता है और इसके सदस्यों के व्यक्तित्व और चरित्र को आकार देता है। यह बच्चे की भावनात्मक हित को प्रभावित करता है।
- **<u>सामाजिक संरचना का मूल:</u>** परिवार की इकाइयाँ ही संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था बनाती हैं।
- **<u>सदस्यों की जिम्मेदारी</u>:** परिवार के प्रत्येक सदस्य की विशेष जिम्मेदारियां, कार्य और दायित्व होते हैं।
- **मैक्लेवर के अनुसार:** संकट के समय में पुरुष अपने देश के लिए श्रम कर सकते हैं, लड़ सकते हैं और मर सकते हैं, लेकिन वे अपने परिवारों के लिए जीवन भर परिश्रम करते हैं।
- **<u>सामाजिक नियमन:</u>** सामाजिक वर्जनाएँ और विधायी नियम दोनों ही परिवार की रक्षा करते हैं। संगठन को टूटने से बचाने के लिए समाज सावधानी बरतता है।

<u>परिवार के प्रकार</u>

विवाह का आधार

- **<u>एकविवाही परिवार:</u>** एक समय में केवल एक साथी होता है।
- **<u>बहुविवाही परिवार:</u>** एक साथी (पुरुष या महिला) के कई पति-पत्नी हैं।
- **<u>बहुपति परिवार:</u>** महिला एक ही समय में एक से अधिक पुरुषों से विवाह करती है।

निवास की प्रकृति का आधार

- **<u>मातृस्थानीय निवास का परिवार:</u>** वयस्कता प्राप्त करने के बाद, एक महिला अपनी मां के घर लौट आती है और अपने पति को अपने परिवार के साथ रहने के लिए ले जाती है।
- **<u>पितृस्थानीय निवास का परिवार</u>:** वयस्क होने के बाद, एक लड़का अपने पिता के घर लौटता है और अपनी पत्नी को अपने परिवार के साथ रहने के लिए लाता है।
- **<u>परिवर्तित निवास का परिवार</u>:** परिवर्तित निवास का परिवार वह होता है जो पति के घर में कुछ समय रहता है और फिर पत्नी के घर जाता है, वहां कुछ समय रहता है, और फिर पति के माता-पिता के पास वापस चला जाता है या कहीं और रहने लगता है।

वंश का आधार

- **मातृवंशीय परिवार:** पारिवारिक संबंध जो एक महिला से संबद्ध हो सकते हैं।
- **पितृवंशीय परिवार:** पारिवारिक संबंध जो किसी पुरुष से मिलते हैं।

प्राधिकार की प्रकृति का आधार

- **मातृसत्तात्मक परिवार:** एक मातृसत्तात्मक समाज, परिवार या संस्था में महिला अधिकारी होती हैं और अधिकार या संपत्ति माँ से बेटी को हस्तांतरित होती है।
- **पितृसत्तात्मक परिवार:** एक प्रकार की सामाजिक संरचना जिसमें पिता परिवार, कबीले या जनजाति का अंतिम अधिकार होता है, और उत्तराधिकार का पता पुरुष रेखा के माध्यम से लगाया जाता है, जिसमें पिता के वंश या जनजाति की संतान होती है।

आकार या संरचना और पीढ़ियों का आधार

- **एकल परिवार:** एक पारिवारिक इकाई जो माता-पिता और उनके बच्चों से बनी होती है। यह केवल एकल अभिभावक वाले परिवार, एक विशाल विस्तारित परिवार, या 2 से अधिक माता-पिता वाले परिवार से भिन्न होता है।
- **संयुक्त या अविभाजित परिवार:** एक विस्तारित परिवार संरचना जो पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में विशिष्ट है, जिसमें एक ही घर में रहने वाली कई पीढ़ियां शामिल हैं, जिनमें से सभी एक आम रिश्ते से जुड़ी हुई हैं।

परिवार के सदस्यों के बीच संबंधों की प्रकृति का आधार

- **संगीन परिवार:** वह परिवार जिसमें ऐसे सदस्य होते हैं जो एक दूसरे से संबंधित नहीं होते हैं।
- इस परिवार में दादा-दादी, चाची, चाचा और चचेरे भाई शामिल हैं, जो सभी एक ही घर में विवाहित जोड़े और उनके बच्चों के साथ रहते हैं।
- रक्त संबंधियों के साथ-साथ तत्काल परिवार के सदस्य भी शामिल हैं।
- विस्तारित परिवार को अक्सर एक रूढ़िवादी परिवार के रूप में जाना जाता है।
- **दाम्पत्य परिवार:** पति-पत्नी और उनके बच्चों से मिलकर बनता है। इसमें दो वयस्क पति-पत्नी और उनके नाबालिग बच्चे शामिल हैं जिनकी शादी नहीं हुई है।
    - इसमें केवल विवाहित जोड़े शामिल हो सकते हैं यदि जोड़े के बच्चे नहीं हैं या यदि बच्चे विवाहित हैं और उनके अपने परिवार हैं।

भारतीय परिवारों की बदलती प्रकृति

विकासशील परिवार

- एकल परिवार के रूप ने लोकप्रियता हासिल की है।
- तलाक की संख्या में वृद्धि से समाज में एकल माता-पिता की हिस्सेदारी बढ़ी है।
- एकल-पिता वाले परिवारों की तुलना में 5.4% अधिक एकल-माता वाले परिवार हैं।

निर्णय लेना

- पारंपरिक घरों में पत्नी का पारिवारिक फैसलों में कोई हस्तक्षेप नहीं होता था।
- आज के घर में, परिवार के खर्चों का बजट बनाने, बच्चों को अनुशासित करने, चीजें खरीदने और उपहार देने की बात आती है, तो महिला खुद को सत्ता में बराबर के रूप में देखती है।

कार्यों में समान भागीदारी:

- महिलाएं अब घरेलू काम तक ही सीमित नहीं हैं और उन्होंने अधिक आर्थिक, कानूनी और शैक्षिक अधिकार प्राप्त कर लिया है।
- चूंकि पति और पत्नी दोनों काम में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मध्यम वर्गीय परिवारों की आय में वृद्धि हुई है।

प्राधिकरण में परिवर्तन:

- सत्ता पितृसत्ता से ऐसे माता-पिता को हस्तांतरित हो गई है जो
  - निर्णय लेने से पहले अपने बच्चों से सभी प्रमुख विकल्पों पर परामर्श करते हैं।

बच्चों की बढ़ती आजादी:

- बच्चों और माता-पिता के बीच संबंध अधिक खुले हुए हैं।
- कई विधायी परिवर्तनों के परिणामस्वरूप बच्चे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए हैं।

भारतीय परिवार संरचना में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारक

औद्योगीकरण:

- ग्रामीण लोगों को काम और जीवन की उच्च गुणवत्ता की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने के लिए प्रेरित किया, अपने विस्तारित परिवारों के साथ अपने संबंधों को तोड़ दिया।
- संयुक्त परिवार प्रणाली की बुनियादी नींव को कमजोर कर दिया।

शहरीकरण:

- एकाकी परिवारों का निर्माण हुआ।
- व्यक्तित्व और गोपनीयता पर जोर दिया गया है।

शिक्षा:

- लोगों के दृष्टिकोण, विश्वासों, मूल्यों और विचारधाराओं को प्रभावित किया।
- प्रश्न पूछने की संस्कृति विकसित की।
- व्यक्तिवादी दृष्टिकोण विकसित हुआ।
- एकल परिवार संस्कृति को बढ़ावा दिया और संयुक्त परिवार की स्थापना को हतोत्साहित किया।

महिलाओं की बढ़ती जागरूकता

- उनके अधिकारों और समानता के बारे में जागरूकता बढ़ी।
- रोजगार बढ़ने से महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं
- अधिक समानता के परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

विवाह के संरचना में परिवर्तन

- विवाह की आयु में परिवर्तन, साथी के चयन में लचीलापन और विवाह के बारे में व्यक्तिगत दृष्टिकोण सभी का संयुक्त परिवार प्रणाली पर प्रभाव पड़ा है।
- परिवार पर पितृसत्तात्मक शक्ति कमजोर हो गई है।

सामाजिक विधान

- अधिनियमों ने पारस्परिक संबंधों और पारिवारिक संरचना और संयुक्त परिवारों की स्थिरता को परिवर्तित किया है।
- 1956 के हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम ने महिलाओं को समान विरासत अधिकार प्रदान करके हिंदू संयुक्त परिवार संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव किए।
- माता-पिता की सहमति के बिना, 1954 का विशेष विवाह अधिनियम किसी भी जाति और धर्म में विवाह के चयन और विवाह की स्वतंत्रता की अनुमति देता है। इसका वैवाहिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

कृषि और ग्रामोद्योग में गिरावट

- गाँव के कारीगरों और शिल्पकारों द्वारा बनाए गए उत्पाद कारखानों में बने माल की कीमत और गुणवत्ता के साथ कम सक्षम होते हैं।
- भीड़भाड़ ने कृषि और आवासीय भूमि पर भी अनुचित दबाव डाला है।
- निराश्रित और बेरोजगार अपने परिवार से अलग होकर अन्यत्र काम की तलाश में अपना घर छोड़ देते हैं।

<u>विवाह</u>

- विवाह एक वैश्विक सामाजिक संस्था है जो परिवार की संस्था से दृढ़ता से जुड़ी हुई है, और इसका गठन मानवता के जीवन को प्रबंधित और विनियमित करने के लिए किया गया था।
- दोनों संस्थाएं परस्पर लाभकारी हैं। यह एक सांस्कृतिक रूप से विविध संस्था है जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रभाव हैं।
- इसके उद्देश्य, कार्य और रूप एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न हो सकते हैं, फिर भी यह हर जगह एक संस्था के रूप में मौजूद है।

विवाह के प्रकार

1. एकविवाही प्रथा

- वह विवाह जिसमें स्त्री का विवाह केवल एक पुरुष से होता है।
- यह दुनिया भर के समुदायों में देखा जाने वाला सबसे आम प्रकार का विवाह है।
- यह पति और पत्नी के बीच प्यार और स्नेह को बढ़ावा देता है। यह पारिवारिक सद्भाव, एकता और आनंद में योगदान देता है।
- एकविवाही प्रथा एक स्थिर और लंबे समय तक चलने वाला रिश्ता है। यह उन विवादों से रहित है जो बहुपत्नी और बहुविवाहित परिवारों में अक्सर होते हैं।
- एकविवाही जोड़े अपने बच्चों के समाजीकरण पर अधिक ध्यान देते हैं।

सीधे एकविवाही प्रथाः व्यक्तियों (स्त्री/पुरुष) को सीधे एकपत्नीत्व/एकपतित्व में पुनर्विवाह करने की अनुमति नहीं है।

सीरियल एकविवाही प्रथाः कई सभ्यताओं में व्यक्तियों (स्त्री/पुरुष) को अपने पहले पति या पत्नी की मृत्यु के बाद या तलाक के बाद फिर से शादी करने की अनुमति है। लेकिन उन्हें एक ही समय में एक से अधिक जीवनसाथी रखने की अनुमति नहीं है।

2. बहुविवाह

a. बहुपत्नीय

- वह विवाह जिसमें एक एकल पुरुष एक ही समय में एक से अधिक महिलाओं से विवाह करता है।
- बहुपत्नीय विवाह बहुपतित्व विवाह की तुलना में अधिक सामान्य है, हालांकि यह अभी भी एक विवाह के रूप में व्यापक नहीं है। प्राचीन संस्कृतियों में, यह एक व्यापक प्रथा थी।
- यह अब आदिम भारतीय जनजातियों जैसे क्रो इंडियन, बैगा और गोंड के बीच पाया जाता है।

प्रकार

<u>सोरोरल बहुपत्नीय प्रथा</u>

- पत्नियां आमतौर पर बहनें होती हैं। इसे सोरोरेट के नाम से भी जाना जाता है।

<u>गैर-सोरोरल बहुपत्नीय प्रथा</u>

- यह एक तरह की शादी है जब महिलाएं बहनें नहीं होती हैं।

b. बहुपतित्व

- बहुपति प्रथा कई पुरुषों के साथ एक अकेली महिला का मिलन है।
- मार्केसस द्वीप समूह में पॉलिनेशियन, बहामा द्वीप पर अफ्रीकियों और सामोन जनजातियों द्वारा अभ्यास किया जाता है।
- भारतीय जनजातियाँ: तियान, टोडा, कोटा, खासा और लद्दाखी बोटा जनजातियाँ।

प्रकार

<u>गैर-बिरादराना बहुपतित्व प्रथा</u>

- शादी से पहले पतियों को घनिष्ट मित्रता स्थापित करने की आवश्यकता नहीं होती है।
- महिला प्रत्येक पति या पत्नी से थोड़े समय के लिए मिलने जाती है।
- दूसरों का उस महिला पर कोई अधिकार नहीं है जो अपने एक पति के साथ रहती है।

बिरादराना बहुपतित्व प्रथा

- कई भाइयों में एक ही दुल्हन को बांटने की प्रथा।
- लेविरेट अपने पति के भाइयों के लिए एक वास्तविक या संभावित साथी बनने की प्रथा को संदर्भित करता है।
- भारत में, यह टोडों के बीच आम है।

विवाह के नियम

सगोत्र विवाह

- एक वैवाहिक नियमन जिसमें जीवन साथी समूह के अंदर से चुने जाते हैं।
- यह एक ही जाति, वर्ग, जनजाति, जाति, गांव या धार्मिक समूह के सदस्यों के बीच विवाह है।

प्रकार

- **जाति सजातीय विवाह:** विवाह जाति के भीतर ही होना चाहिए। जैसे: एक ब्राह्मण को दूसरे ब्राह्मण से विवाह करना चाहिए।
- **उप जाति सजातीय विवाह**: यह उप जाति समूहों तक ही सीमित है।
- **वर्गीय सजातीय विवाह:** एक ही क्लास में शादी।
- **जाति अंतर्विवाह:** एक ही जाति में विवाह।
- **जनजातीय सजातीय विवाह**: एक ही जनजाति में विवाह।

बहिर्विवाह

- एक वैवाहिक नियमन जिसके लिए एक व्यक्ति को अपने समूह के बाहर शादी करने की आवश्यकता होती है।
- यह समूह के सदस्यों को एक दूसरे से शादी करने से रोकता है।
- रक्त संबंधियों को विवाह करने या एक दूसरे के साथ यौन संबंध बनाने की अनुमति नहीं है।

प्रकार

- **गोत्र बहिर्विवाह:** अपने से अलग गोत्र से विवाह करने की हिंदू परंपरा।
- **प्रवर बहिर्विवाह:** एक ही प्रवर के सदस्यों को विवाह करने की अनुमति नहीं है।

प्रवर: हिंदू संस्कृति में, एक प्रवर पहचान की एक प्रणाली है, विशेष रूप से एक पारिवारिक रेखा।
एक विशेष ब्राह्मण का एक ऋषि से चला आ रहा वंश जो उनके गोत्र (कुल) के थे।

- **ग्राम बहिर्विवाह:** कई भारतीय जनजातियाँ, जैसे नागा, गारो और मुंडा, अपने गाँव के बाहर विवाह करने का अभ्यास करती हैं।
- **पिंडा बहिर्विवाह:** जो एक ही पांडा या सपिंडा (एक ही वंश) साझा करते हैं, वे अपने भीतर विवाह करने में असमर्थ होते हैं।
- **इसोगैमी:** दो लोगों के बीच एक विवाह जो समान स्तर (स्थिति) पर हैं।
- **अनिसोगैमी:** विभिन्न सामाजिक आर्थिक पदों के दो व्यक्तियों के बीच एक विषम वैवाहिक संबंध।

प्रकार

- **हाइपरगैमी:** एक महिला उच्च वर्ण / उच्च जाति / परिवार के लड़के से शादी करती है।
- **हाइपोगैमी:** उच्च जाति के पुरुष का निचली जाति की महिला से मिलन।
- **ऑर्थोगैमी:** चयनित समूहों के दो या दो से अधिक लोगों का विवाह।
- **कार्योगामी:** दो या दो से अधिक पुरुष दो या दो से अधिक महिलाओं से विवाह करते हैं।
- **अनुलोम विवाह:** ऐसा विवाह जिसमें कोई पुरुष अपनी ही जाति या निम्न जाति से विवाह कर सकता है, जबकि एक महिला केवल अपनी ही जाति या उच्च जाति से विवाह कर सकती है।
- **प्रतिलोम विवाह:** एक महिला और एक निचली जाति के पुरुष के बीच निषिद्ध मिलन।

रिश्तेदारी

- खून के बंधन, शादी और नातेदारों की मौजूदगी से बना रिश्ता।
- यह सबसे मौलिक सामाजिक संस्थाओं में से एक है।
- रिश्तेदारी सर्वव्यापी है और अधिकांश समुदायों में व्यक्तियों के समाजीकरण और समूह सामंजस्य के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- यह आदिम समुदायों में अत्यंत आवश्यक है और उनकी लगभग सभी गतिविधियों पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- ए.आर. रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार: यह एक समाज में लोगों के बीच गतिशील संबंधों की एक प्रणाली है, इनमें से किसी भी रिश्ते में किन्हीं दो लोगों के आचरण को किसी न किसी तरीके से और सामाजिक उपयोग द्वारा अधिक या कम मात्रा में विनियमित किया जाता है।

रिश्तेदारी के प्रकार

1. **अफ़िनल रिश्तेदारी**
   - विवाह आधारित रिश्तेदारी।
   - जब कोई जोड़ा शादी करता है, तो नए रिश्ते बनते हैं।
   - लड़का न केवल लड़की और उसके परिवार के साथ एक बंधन बनाता है, बल्कि पुरुष और महिला दोनों के परिवार भी जुड़ जाते हैं।
   - उदाहरण: एग्नेट्स (सपिंडस, सोगेट्रास); संज्ञेय (माँ की ओर से); बंधु (आत्मबंधु, पितृबंधु, और मातृबंधु)।
2. **सजातीय रिश्तेदारी**
   - एक रक्त संबंधी रिश्तेदारी।
   - जैसे: माता-पिता और उनकी संतानों के बीच या एक ही माता-पिता के बच्चों के बीच।
   - संगत परिजन बेटे, बेटियां, भाई, बहन, चाचा आदि हैं।

रिश्तेदारी की डिग्री

1. **प्राथमिक परिजन**
   - व्यक्ति के सबसे निकट रिश्तेदार।
   - एकल परिवार के प्रत्येक सदस्य के परिवार के भीतर उसका प्राथमिक परिजन होता है।
   - आठ प्राथमिक परिजन: पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्री, छोटा भाई-बड़ा भाई, छोटी बहन-बड़ी बहन और भाई-बहन।
2. **माध्यमिक परिजन**
   - प्राथमिक परिजनों के रिश्तेदार
   - एक व्यक्ति के 33 अलग-अलग प्रकार के माध्यमिक रिश्तेदार हो सकते हैं
   - जैसे: ससुराल वाले, चचेरे भाई, चाची, भतीजी आदि।
3. **तृतीयक परिजन:**
   - किसी व्यक्ति के द्वितीयक रिश्तेदारों के प्राथमिक रिश्तेदार।
   - तृतीयक परिजन 151 विभिन्न प्रकार के होते हैं।
   - जैसे: पत्नी के भाई का पुत्र, बहन की पत्नी का भाई, इत्यादि।

रिश्तेदारी के सिद्धांत

- रिश्तेदारी विभिन्न सामाजिक समूहों में लोगों के बीच अंतःक्रिया के लिए मानक प्रदान करती है।
- यह उचित और स्वीकार्य संबंध स्थापित करता है और सामाजिक जीवन को नियंत्रित करता है।
- ये संबंध रिश्तेदारी के सिद्धांतों द्वारा शासित होते हैं।

<u>प्रकार</u>

<u>परिहार</u>

- परिहार ऐसे मानदंड निर्धारित करते हैं कि मिश्रित ढांचा में पुरुषों और महिलाओं को अपने भाषण, पोशाक और इशारों में एक विशेष स्तर की विनम्रता बनाए रखनी चाहिए।
- जैसे: पर्दा प्रणाली।

टेक्नोनिमी

- एक परिजन को सीधे तौर पर इस रूप में दूसरे परिजन के माध्यम से संदर्भित नहीं किया जाता है।
- उदाहरण: एक पारंपरिक हिंदू घराने में, पत्नी अपने पति को उसके नाम से स्पष्ट रूप से संबोधित नहीं करती है, बल्कि उनके बच्चों के पिता के रूप में संदर्भित करती है।

एवुंकुलेट

- एक मातृसत्तात्मक समाज में देखा जाता है जहाँ मामा को उसके भतीजों और भतीजों के जीवन में महत्व दिया जाता है।

अमिते

- पिता की बहन को एक विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।
- टोडस में बच्चे के नाम का अधिकार पिता की बहन को दिया गया है।

कौवाडे

- यह खासी और टोडा जनजातियों में आम है, पति अपने पत्नी के बच्चा देने पर उसके साथ रहने से परहेज करता है।
- वह शारीरिक रोजगार से परहेज करता है, सख्त आहार का पालन करता है, और विभिन्न वर्जनाओं का पालन करता है जो उसकी पत्नी देखती है।

वंश

- एक समूह जिसके सदस्यों का एक सामान्य पूर्वज होता है।
- किसी व्यक्ति के पूर्वजों का पता लगाने में मदद करता है।

वंश के प्रकार

एकरेखीय वंश

- पूर्वजों की केवल एक पंक्ति के माध्यम से रिश्तेदारी का पता लगाने की विधि।

प्रकार

- पितृवंशीय वंश: पुरुष वंश के माध्यम से रिश्तेदारी का पता लगाना।
- मातृवंशीय वंश: स्त्री वंश के माध्यम से नातेदारी का पता लगाना।

संज्ञानात्मक वंश

- माता और पिता दोनों के पूर्वजों के माध्यम से कुछ हद तक रिश्तेदारी का पता लगाने की विधि।

प्रकार

- द्विपक्षीय वंश: माता और पिता दोनों की ओर से रिश्तेदार समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। बच्चों को माता-पिता दोनों के माध्यम से समान रूप से वंशज माना जाता है।
- उभयलिंगी वंश: बच्चे आमतौर पर वयस्क होने पर परिवार के माता या पिता के पक्ष को रिश्तेदार माने जाने के लिए चुनते हैं।

रिश्तेदारी और वंश के बीच अंतर

रिश्तेदारी:

- रिश्तेदारी रक्त और विवाह पर आधारित लोगों के बीच सामाजिक संबंधों की एक प्रणाली है।
- जैविक संबंधों और गैर-जैविक संबंधों दोनों पर विचार करता है।
- दो मुख्य प्रकार: सजातीय रिश्तेदारी और आत्मीय रिश्तेदारी।

वंश

- वंश समाज में लोगों के बीच सामाजिक रूप से मौजूदा मान्यता प्राप्त जैविक संबंध है।
- केवल जैविक संबंधों पर विचार करता है।
- दो मुख्य प्रकार: एकतरफा वंश और संज्ञानात्मक वंश।